International Journal of Applied Research 2019; 5(2): 211-215

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2019; 5(2): 211-215
www.allresearchjournal.com
Received: 28-12-2018
Accepted: 30-01-2019

डॉ. अनिता देवी
मैत्रेयी कॉलेज, दिल्ली
विश्वविद्यालय, दिल्ली, भारत

Correspondence
डॉ. अनिता देवी
मैत्रेयी कॉलेज, दिल्ली
विश्वविद्यालय, दिल्ली, भारत

चिरंजीत के साहित्य में राष्ट्रीय चेतना

डॉ. अनिता देवी

प्रस्तावना

चिरंजीत हिंदी के वरिष्ठ नाटककार, गीतकार, कवि, उपन्यासकार, व्यंग्यकार और पत्रकार हैं। 18 दिसंबर 1919 में जन्मे चिरंजीत राष्ट्रीय स्वाधीनता संग्राम के दृष्टा ही नहीं भोक्ता भी थे। राष्ट्रीयता उनके साहित्य का प्रमुख तत्व है, उनमें देशभक्ति अथवा राष्ट्रीयता कूट-कूट कर भरी हुई थी। वे महात्मा गांधी के व्यक्तित्व से इस कदर प्रभावित थे कि जब महात्मा गांधी ने जब १९४२ में असहयोग आंदोलन चलाया और करो और मरो के सिद्धांत की उद्घोषणा की, तो उससे प्रभावित होकर चिरंजीत जी ने अपनी सरकारी नौकरी से त्यागपत्र दे दिया था। चिरंजीत में काम के प्रति जो निष्ठा और ईमानदारी दिखाई देती है वह आज के युग में विरल है। कुछ विद्वानों ने उनकों राष्ट्र को समर्पित साधक माना है। डॉ. सुन्दरलाल कथुरिया चिरंजीत के बारें में लिखते हैं- "आस्तिकता, भारतीयता, और मानव-मूल्यों के वे सबल पक्षधर हैंतथा आडम्बर, अनाचार, अन्याय और शोषण के प्रबल विरोधी।" [1] यहीं कारण है कि उनका सम्पूर्ण साहित्य ऱाष्ट्रीय भावना से ओत-प्रोत है।

चिरंजीत का साहित्य और राष्ट्रीयता

श्री चिरंजीत आधुनिक युग के साहित्यकार हैं। वैसे तो उन्होंने साहित्य की अनेक विधाओं में अपनी लेखनी चलाई परन्तु रेडियो नाटककार के रूप में उनको विशेष ख्याति प्राप्त हुई। चिरंजीत के साहित्य में काव्य, नाटक, रेडियो- नाटक, उपन्यास, गीत-ग़ज़ल, पत्रकारिता, एवं बालसाहित्य आदि शामिल हैं। इन सभी विधाओं का विकास आजादी के बाद अर्थात् भारतेन्दु युग से या आधुनिक काल में ही हुआ। चिरंजीत को नाटकों के क्षेत्र में भारतेन्दु और प्रसाद की शैली का माना गया है, क्योंकि चिरंजीत ने भी भारतेन्दु और प्रसाद की तरह अपने नाटकों की रचना केवल दर्शकों या पाठकों का मनोरंजन करने के लिए नहीं, बल्कि उनको सीख देने और उनमें विवेक उत्पन्न करने के लिए की, भारतेन्दु और प्रसाद की तरह ही उनके नाटकों का उद्देश्य भी जनता में सामाजिक एवं राजनैतिक चेतना जगाना, समाज में फैली सामाजिक कुरीतियों का उन्मूलन कर देश का सुधार करना और समय की मांग को देखते हुए देश के युवाओं में देशानुराग की पावन भावना को जागृत करना था। फर्क बस इतना था कि भारतेन्दु और प्रसाद आजादी से पहले स्वतंत्रता प्राप्त करने के लिए देशवासियों में अलख जगा रहे थे और चिरंजीत आजादी के बाद चीन और पाकिस्तान द्वारा किए गए आक्रमण के समय प्राप्त आजादी का संरक्षण करने के लिए देशवासियों में देशप्रेम की भावना भर रहे थे। भारतेन्दु के बाद जयशंकर प्रसाद ने भारतेन्दु की नाट्य परम्परा को

आगे बढाने के साथ-साथ नाटकों को एक नई दिशा दी। उन्होंने ऐतिहासिक नाटकों में अपने समय की परिस्थितियों को देखते हुए इतिहास के उन प्रसंगों को उठाया जो देश की तत्कालीन परिस्थितियों में अंग्रेजों की गुलामियत को सहन करने वाली भारतीय जनता में वीरता की भावना भर दे। जिस प्रकार अपने नाटकों में प्रसाद ने देश की महान और गौरवपूर्ण संस्कृति की रक्षा की है, मानवता, राष्ट्रीयता, विश्वदृष्टि, धार्मिक चेतना, जनतंत्र की स्थापना, गांधीवाद, जातिवाद का विरोध आदि का वर्णन किया है, उसी तरह चिरंजीत ने भी अपने नाट्य साहित्य में भारतीय संस्कृति की रक्षा की है तथा भारतेन्दु और प्रसाद की नाट्यधारा के संवाहक के रूप में सामने आते हैं, जिनके नाट्यकर्म का लक्ष्य सहृदय के हृदय में राष्ट्र प्रेम की भावना का संचार करना है। डॉ. सुन्दर लाल कथुरिया लिखते हैं- "पद्मश्री चिरंजीत हिंदी-रेडियो नाटकों के भीष्म पितामह हैं। उन्होंने अपने जीवनकाल में रेडियो से जुड़ी सहसाधिक रचनाओं की सृष्टि की है।" [2] यह सच है कि चिरंजीत जी को रेडियो-नाटककार के रूप में अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त हुई है, जो अब तक किसी भारतीय नाटककार को नहीं प्राप्त हुई है। इस कार्य के लिए सरकार ने उनको पद्मश्री देकर सम्मानित भी किया। क्योंकि 1962 में जब चीन ने भारत पर आक्रमण कर देश की अखण्डता और एकता के लिए खतरा पैदा किया, तो उस समय चिरंजीत ने राष्ट्रीय भावना से ओत-प्रोत साहित्य की रचना कर देशवासियों में देशप्रेम की अलख जगाई। उनके नाटक 'ढोल की पोल' का उल्लेख हिंदी के पहले राजनैतिक व्यंग्य- प्रधान धारावाहिक नाटक के रूप में होता है। 1962 में आयोजित एक समारोह में तत्कालीन सूचना एवं प्रसारण मंत्री श्रीमती नंदिनी सतपथी ने कहा था- "दिसम्बर 1971 (और उससे पहले सन् 1964) के भारत पाकिस्तान युद्ध में ढोल की पोल, (रेडियो झूठिस्थान) के लेखक- निर्देशक श्री चिरंजीत और उनके रेडियो-कलाकारों ने उसी स्तर पर वीरतापूर्ण हिस्सा लिया था, जिस स्तर पर हमारी सेना के जवानों ने।" [3] 1970 तक इन्होंने रेडियो के लिए ही नाट्य लेखन किया। पाकिस्तान से युद्ध के समय आकाशवाणी द्वारा धारावाहिक रूप से प्रसारित 'ढोल की पोल', लोकप्रियता की दृष्टि से सफल नाटक माना गया है। इसके अतिरिक्त शब्दकोश का नुस्खा, मदारी, घर का मोर्चा आदि नाटकों की भी रचना की। उनको राष्ट्रीय सांस्कृतिक धारा के नाटककारों में शामिल करते हुए डॉ. महेन्द्र कुमार लिखते हैं- "राष्ट्रीय सास्कृतिक धारा के समकालीन नाटककारों में श्री चिरंजीत का नाम सम्मान के साथ नाम लिया जा सकता है, क्योंकि वे इतिहास-पुराण के माध्यम से राष्ट्रीयता की अभिव्यक्ति करने के स्थान पर वर्तमान जीवन और समस्याओं के परिप्रेक्ष्य में राष्ट्रीयता का प्रतिपादन करते हुए यथार्थ को स्वस्थ रूप में प्रस्तुत करते हैं। उनके द्वारा लिखे गए नाटकों में मानव-जीवन और राष्ट्र की विभिन्न समस्याओं को यथार्थ के साथ उजागर किया गया है, जिससे वास्तविकता के साथ औचित्य और सुरुचि का अनुभव होता है। उनके नाटकों की उपयोगिता और उनका महत्तव इसी बात से आंका जा सकता है कि वे पाठक के भीतर जीवन के प्रति स्वस्थ दृष्टि, आस्था और विश्वास उत्पन्न करते हैं। उनका यथार्थ सुधारोन्मुख है। चारित्रिक ह्रास के इस युग में ऐसे ही नाटकों कि आवश्यकता है।" [4]

जब हम चिरंजीत के नाट्य साहित्य का अध्ययन करते हैं तो ऐसा लगता है जैसे आजादी से पहले भारतेन्दु ने जिस राष्ट्रीयता और समाजसुधार की परम्परा का आरंभ किया था, उसी परम्परा का विकास चिरंजीत आजादी के बाद अपनी रचनाओं में रहे हैं। क्योंकि आजादी के कुछ समय पश्चात ही चीन ने (1962) भारत पर आक्रमण कर दिया। इस युद्ध में भारत को निराशा हाथ लगी ऐसे में देशवासियों का मनोबल बढ़ाना आवश्यक था। और उसके बाद पाकिस्तान और भारत का युद्ध हुआ। ऐसे समय में देश की सीमाओं की रक्षा कर रहे सेनानियों में जोश भरने और देश के लिए मर-मिटने की भावना जागृत करना ही चिरंजीत जी ने अपना कर्तव्य समझा। चिरंजीत जी सात राष्ट्रीय रेडियो नाटक की प्रस्तावना में लिखते हैं- " मैं बिना किसी झिझक और संकोच के इस बात को स्वीकार करता हूँ कि मेरा समूचा नाट्य-लेखन सकारात्मक सामाजिक सोद्देश्यता एवं राष्ट्रीय प्रतिबद्धता से अनुशासित- प्रेरित रहा है। नाटक को मैं लोकरंजन प्रशिक्षण तथा सोद्देश्य संप्रेषण का सशक्त एवं प्रभावी माध्यम मानता हूँ कि भारत जैसे बहुसंख्यक निरक्षर समाज वाले विकासशील देश में नाटक का लक्ष्य नकारात्मक न होकर सकारात्मक होना चाहिए।" [5]

चिरंजीत जी ने रेडियो के लिए नाटक लिखे। ये नाटक आकाशवाणी और दूरदर्शन पर धारावाहिकों के रूप में प्रसारित हुए। इसलिए रेडियो नाटककार के रूप में चिरंजीत जी को ज्यादा ख्याति प्राप्त हुई। इन्हीं कारणों से कुछ विद्वानों ने उनको आधुनिक रेडियो नाटकों का प्रवर्तक भी माना है।

चिरंजीत जी गांधी के सिद्धांतों से बहुत प्रभावित थे। 'रतजगा', 'तस्वीर उसकी' और 'आधी रात का सूरज' आदि नाटकों पर गांधीवाद का प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है। भारत की स्वतंत्रता और अखंडता की रक्षा, देशद्रोह, धनलोलुपता, पाश्चात्य सभ्यता का अंधानुकरण, देश रक्षा, राष्ट्र प्रेम, देश के लिए आत्म-बलिदान करने की भावना आदि उनके नाटकों की मुल विषय-वस्तु रही है। नाटक विधा के प्रसिद्ध

विश्लेषक डॉ. दशरथ ओझा 'रतजगा' नाटक की भूमिका में लिखते हैं- "गाधी-युग में जो कार्य बाबू जयशंकर प्रसाद और डी.एल राय ने किया, वहीं आज देश-जागरण का नाट्य-साहित्य रचकर श्री चिरंजीत कर रहे हैं। उनकी नवीनतम कृति 'रतजगा' इसी उद्देश्य का परिणाम है। ऐसा प्रतीत होता है कि देशद्रोही धन-लोलुपों और सैक्स- विलासियों के विरुद्ध जो कार्य उनके नाटक 'तस्वीर उसकी' में प्रारंभ हुआ था, उसी की पूर्ण परिणति 'रतजगा' में हुई है।....में पूरे विश्वास के साथ कह सकता हूँ कि आज के तमाम राष्ट्रीय नाटकों में स्वस्थ राष्ट्रप्रेम से ओत-प्रोत, देश रक्षा में आत्मबलिदान का मार्ग दिखाने वाली यह नाट्य-कृति सर्वोच्चय स्थान पर आसीन की जाएगी।" [6] चिरंजीत के समय में ही कुछ ऐसे नाटककार भी थे जो विदेशी भावधारा का अनुकरण कर नाटकों की रचना कर रहे थे और आधुनिकता के नाम पर भारतीय संस्कृति के विपरीत अश्लीलता परोस रहे थे, लेकिन चिरंजीत ने ऐसा नहीं किया, ऐसे में चिरंजीत की राष्ट्रीय प्रतिबद्धता स्वतः ही दिखाई देती है। चिरंजीत स्वयं इस बात को मानते भी हैं- "पश्चिम से आयातित-प्रभावित व्यवस्था विरोधी और भारतीय संस्कृति-विरोधी, विसंगत नाट्य-लेखन भारतीय लोक मानस के लिए घातक सिद्ध हो सकता है। ऐसा नाट्य-लेखन सर्वथा अ-राष्ट्रीय है, इसलिए मैं उसका विरोधी हूँ।" [7] रतजगा, तस्वीर उसकी, मन्दिर की जोत, राम-रहीम, हमला, आधी रात का सूरज, नया मन्वंतर आदि नाटकों में जहाँ राष्ट्रीयता, देशप्रेम, नई पीढ़ी पर पाश्चात्य प्रभाव, लोकतंत्र व्यवस्था में फैला भ्रष्टाचार, जातिवाद, नैतिक पतन, समाज में व्याप्त आर्थिक-सामाजिक असमानता, दूषित होते पर्यावरण की समस्या आदि गंभीर विषयों को उठाया गया है, तो दूसरी ओर ढोल की पोल, अजगर राज, दादी माँ जागी, इन्द्रधनुष, मदारी आदि हास्य-व्यग्य शैली में लिखी गई रचनाएँ हैं। नाटकों में भारत की स्वतंत्रता, अखंडता, एकता और अस्मिता की रक्षा का प्रतिपादन बड़े ही प्रभावशाली ढंग से हुआ है। है। पूर्व लोकसभा अध्यक्ष डॉ. बलराम जाखड़ ने भी चिरंजीत को राष्ट्रवादी साहित्यकार माना है। वे लिखते हैं- " श्री चिरंजीत जैसे राष्ट्रवादी साहित्यकार आतंकवाद से लोहा लेकर देश के दुश्मनों द्वारा भारत की स्वतंत्रता व अखंडता नष्ट करने की साजिश को नाकाम करने में महत्तवपूर्ण भूमिका अदा कर सकते हैं।" [8]

'रतजगा' उनका पहला राष्ट्रीय नाटक है। जिसका नायक एक बुढ़ा स्वतंत्रता-सेनानी है। नाटक में फ्लैश-बैक की तकनीक का प्रयोग हुआ है। 'तस्वीर उसकी' नाटक १९६२ के चीनी आक्रमण का सामना करने वाले एक सैनिक वीर और उसकी प्रेमिका की शौर्य गाथा पर आधारित राष्ट्रीय नाटक है। यह सभी भारतीय भाषाओं में अनुदित होकर देश के सभी आकाशवाणी केंदों से प्रसारित हुआ था। इस नाटक में देश के भीतरी और बाहरी शत्रुओं को बेनकाब किया है, क्योंकि चिरंजीत जी का मानना है कि आजादी के बाद देश को जितना खतरा भीतरी शत्रुओं से है, उतना खतरा बाहरी शत्रुओं से नहीं है। 'मंदिर की जोत' भी राष्ट्रीय एकांकी है, जिसमें दिल्ली के एक व्यापारी खत्री -परिवार की लड़की शोभा की देशभक्ति का सुन्दर चित्रण किया है। उसकी दादी गंगादेवी ने सन् 1942 की जनक्रांति में अपने प्राणों की आहुति दी थी। अपनी दादी को अपना आदर्श मानकर यह लड़की देश की रक्षा करने का संकल्प लेती है। डसके माता-पिता और भाई धन-लोलुप हैं, वह उनका हर्दय परिवर्तन करती है, उनमें देशभक्ति की भावना का संचार करती है। इस संग्रह में संकलित सभी नाटक देशभक्ति, देशरक्षा, उच्च आदर्शों पर आधारित हैं। 'सात युवमंच नाटक' नामक एकांकी संग्रह जो 1976 में प्रकाशित हुआ, में संकलित 'हमला', 'एक और प्रहलाद' तथा 'मुनिया जिन्दाबाद' आदि एकांकी भी राष्ट्रीय नाट्य साहित्य की कोटि में आती हैं। १९६६ में प्रकाशित अत्यंत लोकप्रिय एकांकी संग्रह 'पाँच प्रहसन' में 'चक्रव्यूह' नामक नाटक भी राष्ट्रीय नाटक है, जिसमें उन भीतरी शत्रुओं को बेनकाब किया गया है जो जातिवाद, भाषावाद, क्षेत्रवाद को उछालकर देश की एकता, अस्मिता के लिए खतरा पैदा कर रहे हैं। इसी तरह बालोपयोगी एकांकी संग्रह भी राजनैतिक दृष्टि से महत्तवपूर्ण है। चिरंजीत जी ने अपने नाटकों में नारी को पुरुष के बराबर माना है। वह देश को लेकर चिंतित है और जीवन के प्रत्येक मोड़ पर सूझबूझ से काम लेती है। 'किस्सा शान्ति का' नाम से टेलिविज़न पर प्रसारित प्रसिद्ध धारावाहिक किसको याद नहीं है? अर्थात् सबको याद है। वह धारावाहिक चिरंजीत के नाटक 'घेराव' पर ही आधारित था। 'दादी माँ जागी' नाटक में चिरंजीत ने भारत के अतीत और वर्तमान को एक साथ रखकर पुरानी और नई पीढ़ी के टकराव, मेल-मिलाप और राष्ट्रीय मुल्यों की स्थापना पर बल दिया है।

'नया मन्वंतर' चिरंजीत का नया नाटक है, जिसका विषय उनके अन्य नाटकों से बिल्कुल अलग है। इस नाटक में उन्होंने प्रदुषण की समस्या को उठाया है, और उनका मानना है कि इस समस्या को पैदा करने वाला स्वयं मनुष्य ही है, यह समस्या केवल भारत की नहीं बल्कि पूरे विश्व की है। 'नया मन्वंतर' के संबंध में विद्वानों का मत हैं कि पर्यावरण पर लिखा गया यह नाटक हिंदी साहित्य का ही नहीं, भारतीय साहित्य का भी पहला नाटक है। 'नया मन्वंतर' के बाद उनका दूसरा नया नाटक 'आधी रात का सूरज' है। 'आधी रात का सूरज' से उनका तात्पर्य स्वतंत्रता के सूर्य से है, भारतीय स्वतंत्रता का यह सूरज आधी रात

को उदित होकर न कभी अस्त हुआ है और न कभी होगा। बाहर और भीतर की आसुरी शक्तियाँ इस पर अंधकार की काली छाया डालने का प्रायः प्रयास करती रहती हैं। यहाँ आसुरी शक्तियों से तात्पर्य सामाजिक बुराईयों से है, जो समाज के विकास को अवरूद्ध करती हैं। उन्हीं आसुरी शक्तियों के विरूद्ध जनता में जागरूकता लाने के उद्देश्य से ही इस नाटक का सृजन हुआ है। नाटक के माध्यम से लेखक यह कहना चाहते हैं कि हमें अपने समाज की भीतरी कमजोरियों को दूर करना होगा। पश्चमी सभ्यता के प्रभावस्वरूप युवाओं में बढ़ते शराब के सेवन का विरोध किया है। उन्होंने देश की अखण्डता की रक्षा के लिए आज की युवा पीढी का आह्वान किया है।

श्री चिरजीत ने उपन्यास भी लिखे। स्वामी सिलबिलानंद कुबेर टाइम्स में धारावाहिक के रूप में प्रकाशित हुआ। कहानी एक कमल की जो नारी की समस्याओं को लेकर लिखा गया, महाश्वेता उपन्यास भी नारी समस्या को केन्द्र में रखकर लिखा गया है, उसे पढ़कर जैनेन्द्र कुमार ने कहा था- 'हिंदी के आधुनिक कथा-साहित्य में यह अपनी किस्म का पहला उपन्यास है।" [9] 'मास्टर-सिलबिल' और 'सिलबिल नामा' नामक उपन्यासों द्वारा कथा साहित्य की श्रीवृद्धि की है। आकाशवाणी के 'सिलबिल नामा' हास्य चरित्र के सृष्टा भी चिरंजीत जी ही हैं।

चिरंजीत जी ने दिल्ली के इतिहास और संस्कृति का भी अध्ययन किया। इसके अतिरिक्त चाहे उनके नाटक हो, चाहे उपन्यास हो या गीत संग्रह, या फिर संपादन कार्य के दौरान किया गया स्तम्भ लेखन हो, सब राष्ट्रीय भावना से ओत-प्रोत है। उन्होंने समाज में व्याप्त राजनैतिक- सामाजिक विकृतियों पर व्यंग्य करते हुए भारतीय सांस्कृतिक एवं मानवीय मूल्यों की रक्षा की है।

चिरंजीत उच्चकोटि के गीतकार भी हैं। साहित्य में इसका उल्लेख कम ही मिलता है। उनके गीतकार होने का प्रमाण हमें उनके काव्य संग्रहों में मिलता है। उनके कुल मिलाकर आठ काव्य संग्रह हैं। जिसमें मुक्ति दिवस मुस्काया और मधु की रात और जिन्दगी नामक दो गीत संग्रह हैं, मुक्ति दिवस मुस्काया में राष्ट्रीय भावना से ओत-प्रोत गीत संकलित हैं। जबकि मधु की रात और जिन्दगी में गीतों का विषय प्रेम है। उनके गीतों में अनुभूति और प्रेम की गहराई के साथ-साथ हास्य-व्यंग्य और मानवीय संवेदनाओं का अच्छे से चित्रण हुआ है। चिरंजीत हास्य रस को स्वस्वथ समाज और मानव जीवन के लिए आवश्यक मानते हैं। यही कारण है कि पैरोडीदास के छद्म नाम से उनका गीत संग्रह भी है। मुक्ति दिवस मुस्काया में कुल चालीस गीत हैं, जो सात खंडों में विभाजित हैं, जिनके नाम बंदी जीवन, मुक्ति दिवस मुस्काया, नव निर्माण, स्वतंत्रता एवं अखण्डता, शोक एवं श्रद्धांजलि, तथा परिशिष्ट हैं। इन खण्डों में विषयों रूपी रंगों की अलग-अलग आभा देखने को मिलती है। कवि रूप में चिरंजीत ने जहाँ पराधीनता के समय मुक्त होने की बात की है, तो आजादी के बाद स्वतंत्रता के संरक्षण के गीत गाए हैं। उन्होंने जनजागरण के साथ-साथ राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक एकता की बात की है। मुक्ति दिवस मुस्काया में उन्होंने राष्ट्रीय महापुरुषों का जयगान, जनोपयोगी नीतियों का समर्थन एवं समकालीन विसंगत परिवेश की अभिव्यक्ति की है। ये गीत उनकी निष्कंप आस्था, देशभक्ति और प्रखर राष्ट्रीय चेतना का प्रतीक हैं। डॉ. मनमोहन सहगल उनके साहित्य में व्याप्त राष्ट्रीय चेतना के संबंध में लिखते हैं- "सत्साहित्य की पताका उठाने वाले निर्भीक और शुरवीर लेखक स्वतंत्र देश में सांप्रदायिक निरपेक्षता, मानवीय समता, न्याय, समाजवाद, एकता और सदाचार के महनीय जीवन-मूल्यों का न केवल चित्रण करते हैं, बल्कि जन-मानस में उन मूल्यों के लिए आकर्षण एवं स्वीकार भी उत्पन्न कर देते हैं। वे सच्चे अर्थों में राष्ट्रीय लेखक होते हैं। पद्मश्री चिरंजीत इस दिशा में एक स्थापित हस्ताक्षर हैं। राष्ट्रीय विश्लेषण उन पर थोपा हुआ नहीं, उनके द्वारा अर्जित है। ऐसे में सजृनधर्मी राष्ट्रीयता को सही भूमिका निभा सकते हैं।" [10] मधु की रात और जिन्दगी गीत संग्रह १९६१ में प्रकाशित हुआ है। इस गीत संग्रह की रचनाएं चार खण्डों में विभाजित हैं। पहले खण्ड का शीर्षक मधु की रात है, इसमें चौदह गीत संकलित हैं। स्मृति, स्वप्न खंड की अधमुदी पलके, तुम्हारी याद में आदि ग़जल हैं, ये ग़जल आने वाली पीढ़ी को रास्ता दिखाने का काम कर सकती हैं। इन गज़लों में विद्यमान उर्दू श्रोता के मन को सहज ही बांधने में सक्षम हैं। इन गज़लों में उर्दू-हिंदी का बहुत ही सहज और स्वाभाविक प्रयोग हुआ है, जो कि अन्य रचनाकारों में मिलना कठिन है। इस संग्रह का तीसरा खण्ड जिन्दगी है, जिसमें कवि ने कल्पना लोक में विचरण न करके जीवन के यथार्थ को प्रस्तुत किया है। जीवन संघर्षों से उपजे कटु अनुभव, विषमता, अधुरापन, शोषण, छलकपट, पीड़ा, कुंठा, अधुरापन आदि की अभिव्यक्ति इन गीतों के माध्यम से हुई है। चिरंजीत ने अपने गीतों में शोषितों के जीवन संघर्ष और उनके साथ होने वाले अन्याय को विशेष रूप से वर्णित किया है। ये गीत उनके अन्य गीतों से बिलकुल अलग हैं।

चिरंजीत ने लगभग एक साल तक पत्रकारिता भी की। राष्ट्रीय सहारा, नवभारत टाइम्स आदि दैनिकों में पत्रकार के रूप में भी चिरंजीत जी ने निःस्वार्थ भाव से देश और समाज की सेवा की। उन्होंने दिल्ली से निकलने वाले साप्ताहिक वीर अर्जुन, मनोरंजन, जनसत्ता के साप्ताहिक संस्करन आदि पत्रों का संपादन किया। 1970 में

आकाशवाणी से सेवा निवृत होने के बाद मासिक पत्र सर्वप्रिय का संपादन किया। राजनीतिक और सामाजिक विसंगतियों पर व्यंग्य करने वाले महाकवि पैरोडीदास भी श्री चिरंजीत ही हैं। अंततः कहा जा सकता है कि राष्ट्रीयता का तत्व पद्मश्री चिरंजीत के साहित्य का प्रमुख तत्व है।

आधार ग्रंथ

1. चिरंजीत के नाटक, उपन्यास, काव्य संग्रह
2. राष्ट्रीय नाटककार चिरंजीत, लेखक- आचार्य क्षेमचन्द्र सुमन,
3. सात राष्ट्रीय रेडियो नाटक, चिरंजीत
4. हिंदी के महान साहित्य-साधक, जगदीश प्रसाद शर्मा
5. समसामयिक हिंदी नाटकः बहुआयामी व्यक्तित्व, डॉ. सुन्दरलाल कथूरिया
6. साहित्य परिजात (पत्रिका) अक्टू-दिसंबर १९९९